नीलकमल (*Saussurea graminifolia*)

नीलकमल या बुग्गी हिमालय में 3900 से 4200 मीटर तक की ऊंचाई में पायी जाने वाली सोसूरिया की अन्य प्रजाति है जिसमें घास के समान पत्तियां व नीले रंग का फूल होताहै। बुग्याल नाम बुग्गी से ही प्रयोग में आया है। पौधे का उपयोग पारम्परिक तिब्बती दवाओं में तथा शक्तिवर्धक के रूप में इसका प्रयोग किया जाता है।

उपयोग

ब्रह्म कमल के पत्तों और फूलों के अर्क का उपयोग पारंपरिक, औषधीय, सजावटी और धार्मिक उद्देश्यों के कारण उत्तराखण्ड में यह एक प्रसिद्व पौधा है। इसका उपयोग विभिन्न रोगों या विकारों जैंसे लकवा, सेरेब्रल इस्किमिया, घाव, हृदय सम्बन्धी विकार और मानसिक विकार के उपचार के लिए किया जाता है। कुछ लोग इसे एंटीसेप्टिक के रूप में, हीलिंग कट आदि में भी उपयोग करते हैं। धार्मिक मान्यताओं के आधार पर ब्रह्मकमल के फूलों को नन्दादेवी माता को अर्पित किया जाता है। सूर्यकमल के ऊनी भाग का उपयोग घाव, दमा, ब्रोनकाइटिस, एवं चर्म रोग के लिए किया जाता है। बुग्गी (नीलकमल) यह पॉच बुग्गी में से एक है जिसके नाम के आधार पर बुग्याल शब्द की उत्पत्ति हुई है जो कि जानवरों हेतु पौष्टिक चारा प्रजाति मानी जाति है।

प्रयोग स्थल : माणा वन पंचायत

जी0पी0एस0 –

N 30º 45’ 11.4”

E 079º 30’ 11.0”

ऊंचाई – 3246 मीटर

सोसूरिया प्रजातियां

वन वर्धनिक उत्तराखण्ड,नैनीताल

Silviculturist, Hill Region, Uttarakhand Nainital

(Fairyhall, Tallital, Nainital) 236002

Phone / Fax: (05942)- 236270

e- mail:silvahill_uta@hotmail.com

परिचय (Introduction)

सोसूरिया ऐस्टरेसी (Asteraceae) कुल का एक विशाल समूह है जिसकी पूरे विश्व में लगभग 410 प्रजातियां पाई जाती हैं। भारत में सोसूरिया की 61 प्रजातियां विद्यमान हैं। उच्च हिमालयी क्षेत्रों में पाई जाने वाली सोसूरिया प्रजातियां जैसे ब्रह्मकमल, फेनकमल, सूर्यकमल(कस्तूरी कमल), नीलकमल का विशेष महत्व है। बढते मानव हस्तक्षेप , विदोहन व भूमंडल के तापमान में वृद्धि से ये प्रजातियां संकटापन्न की श्रेणी में आ गई हैं। उत्तराखण्ड राज्य में यह विशेष तौर पर पिण्डारी से लेकर चिफला, रूपकुण्ड, हेमकुण्ड, ब्रजगंगा, फूलों की घाटी, केदारनाथ , वासुकीताल, वेदनी बुग्याल,नन्दी कुण्ड एवं छिप्पला केदार क्षेत्रों में पाया जाता है। इन प्रजातियों के संरक्षण के लिए उत्तराखण्ड सरकार व वन विभाग द्वारा विशेष प्रयास किये जा रहे हैं।

ब्रह्मकमल (*Saussurea obvallata*)

ब्रह्मकमल ऊंचाई वाले क्षेत्रों में पाया जाने वाला दुर्लभ पुष्प है जो सिर्फ हिमालय , उत्तरी बर्मा , और दक्षिण पश्चिम चीन में 3800 से 5000 मीटर की ऊंचाई पर पाया जाता है। इसकी सुन्दरता तथा दैवीय गुणो के कारण ब्रह्मकमल को उत्तराखण्ड का राज्य पुष्प घोषित किया गया है। उत्तराखण्ड में यह विशेष तौर पर पिण्डारी से लेकर चिफला, रूपकुण्ड ,हेमकुण्ड फूलों की घाटी, केदारनाथ, वासुकी ताल वेदनी बुग्याल क्षेत्रों में पाया जाता है। माना जाता है कि ब्रह्मकमल के पौधे में साल में केवल एक बार फूल आता है। जो कि सिर्फ रात्रि में ही खिलता है। पूजा पाठ में उपयोग में आने वाला औषधीय गुणो से युक्त यह दुर्लभ पुष्प अत्यधिक दोहन से लुप्त होने की कगार पर पहुॅच गया है।

फेनकमल(*Saussurea simpsoniana*)

यह हिमालय में 3800 से 5000 मीटर तक की ऊंचाई में पायी जाने वाली सोसूरिया की अन्य प्रजाति है। फेनकमल सूर्यकमल के समान ही दिखाई देता है, केवल पुष्पन के समय बैंगनी रंग के पुष्प शीर्ष ही इनमें मुख्य अन्तर है। औषधि के रूप में सम्पूर्ण पौधे का उपयोग किया जाता है।

कस्तूरी कमल(*Saussurea gossypiphora*)

सूर्यकमल या कस्तूरी कमल हिमालय में 3700 से 5600 मीटर तक की ऊंचाई में पायी जाने वाली सोसूरिया की अन्य प्रजाति है जो ऊन की बॉल के समान आकृति वाला होता है। पौधे का घावों में तथा पारम्परिक चीनी व तिब्बती दवाओं में इसका प्रयोग किया जाता है।